गणपति बप्पा मोरया...के स्वर सुनाई पड़ते हैं तो मानो वही चहल-पहल, वही आस्था सबके मन-मस्तिष्क में उभर आया करती हैं। व्यापारी लोग बड़े-बड़े पंडाल बनाकर गणेश जी की मूर्ति की स्थापना, पूजा-अर्चना करते हैं। ये सब क्यों होता है? उसके पीछे आध्यात्मिक रहस्य क्या है? ज़रा उन बिन्दुओं के रहस्य जानें।

गणेश जी के दोनों ओर बुद्धि और सिद्धि नामक उनकी दो पत्नियाँ दिखाई जाती हैं। ये क्रमश: ज्ञान और उस द्वारा होने वाली सफलता का प्रतीक है। जो बुद्धिवान होगा अर्थात् सोच-समझ कर कार्य करेगा, दूरदर्शिता का प्रयोग करेगा, उसको सिद्धि अथवा सफलता तो होगी ही। सफलता तो ज्ञानवान व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है।

कई बार गणेश जी के चित्रों में उनके साथ केला फल भी चित्रित किया जाता है, साथ ही लक्ष्मी को भी। केले के पौधे की यह विशेषता है कि उसके ऊपर के पत्ते को हटाएं तो उसके नीचे और पत्ता निकल आता है। यदि उसको हटाएं तो उसके नीचे एक और पत्ता सामने आ जाता है। अपनी इस विशेषता के कारण केला इस बात का सूचक है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में गहराई होती है। उसकी गहराई में जायें तो इसमें एक और बात छिपी होती है। इस बात को देखकर किसी कवि ने कहा है –जैसे केले के पात-पात में पात। तैसे ज्ञानी की बात-बात में बात।

अत: गणपति के साथ केले को चित्रित करने के पीछे ये भाव होता है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में बहुत गहराई होती है।

'लक्ष्मी' शब्द 'लक्ष्य' शब्द से बना है। लक्ष्मी को सदा कमल पर बैठे या खड़े दिखाया जाता है। यहाँ तक कि उनके नामों में से एक नाम कमला भी है। लक्ष्मी वैकुण्ठ के राज्य-भाग्य की परिचायिका है। वो पवित्रता, सुख और शान्ति का मूर्त रूप है क्योंकि ज्ञानवान व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य भी सम्पूर्ण पवित्रता व शान्ति के जीवन की प्राप्ति करना अथवा कमल पुष्प समान बनना अर्थात् स्वर्ग का सुखकारी स्वराज्य प्राप्त करना होता है। इसलिए गणपति के साथ लक्ष्मी को दिखाना स्वाभाविक है।

ये सभी लक्षण किस पर चरितार्थ होते हैं?- हमने गणपति जी के जिन अलंकारों व प्रतीकों आदि का उल्लेख किया है, उन सबसे यही निष्कर्ष निकलता है कि गणपति जी, परमपिता परमात्मा द्वारा प्राप्त ज्ञान को गहराई से समझने वाले, उसे जीवन में पूर्णत: व्यवहार में लाने वाले, स्वयं लक्ष्य स्वरूप और ज्ञान की सिद्धियों को प्राप्त करने वाले ही का प्रतीक है।

परन्तु जब हम यह सुनते और मानते हैं कि गणपति शिव सुत, शिव के बालक अथवा पुत्र ही का गुणवाचक या कर्तव्य-वाचक नाम है तो हमें उनके परिचय का और अधिक स्पष्टीकरण मिलता है। गणपति अथवा गणनायक एक प्रकार से प्रजापति अथवा प्रजापिता शब्द का पर्यायवाची है क्योंकि गण और प्रजा लगभग समानार्थक है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि गणपति प्रजापिता ब्रह्मा ही थे। यह उनका कर्तव्य-वाचक नाम है क्योंकि प्रजापिता ब्रह्मा ने ही परमपिता परमात्मा शिव से ज्ञान को प्राप्त कर ज्ञानियों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। ब्रह्माजी की जीवन कहानी को सुनने के बाद इस कथा का रहस्य भी समझ में आता है कि कैसे परमपिता परमात्मा शिव ने उनके पुराने मानवीय संस्कारों के स्थान पर अब उन्हें नये संस्कार और विशाल बुद्धि प्रदान की। उन्होंने इस ईश्वरीय बुद्धि के आधार पर नई सृष्टि की स्थापना के कार्य में आये विघ्नों को पार किया। इसलिए वे विघ्न विनाशक भी हैं।

प्रजापिता ब्रह्मा के अतिरिक्त अन्य भी जो ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त करते हैं और ज्ञानवान के लक्षणों को धारण करते हैं उस पर भी ये लक्षण चरितार्थ होते हैं, गोया वे भी विघ्न-विनाशक ही बन जाते हैं।

स्वास्तिक गणपति का समानार्थक कैसे है?- ''स्वास्तिक'' शब्द का अर्थ है – 'शुभ', 'मंगलकारी'। इसलिए यह विघ्न-विनाशक गणपति का समानार्थक है।

स्वास्तिक वास्तव में सारे ज्ञान का सार

परमपिता परमात्मा द्वारा प्राप्त ज्ञान को गहराई से समझने वाले, उसे जीवन में पूर्णत: व्यवहार में लाने वाले, स्वयं लक्ष्य स्वरूप और ज्ञान की सिद्धियों को प्राप्त करने वाले ही का प्रतीक है - गणेश।

चित्रित करता है। इसके बीच की दो रेखायें जो परस्पर एक-दूसरे को समकोण पर विच्छेद करती हैं, वे किसी एक वृत्त के दो व्यासों के समान हैं जो कि उस वृत्त को चार ऐसे बराबर भागों में बांटते हैं जो परस्पर विपरीत दिशा में हैं और इसलिए दार्शनिक दृष्टिकोण से विपरीत सामाजिक -राजनीतिक-धार्मिक स्थिति के संकेतक हैं। स्वास्तिक की चार भुजाएं इन्हीं चार विपरीत दिशाओं और दशाओं को इंगित करती है। सबसे ऊपर की दायीं ओर की भुजा सतोप्रधानता, पवित्रता, सुख और शान्ति की स्थिति की द्योतक है और इसलिए यह सृष्टि-चक्र के सर्वप्रथम युग–सतयुग को चित्रित करती है। इसके बाद दायीं ओर नीचे की दिशा चित्रित करने वाली भुजा धीरे-धीरे पवित्रता, सुख, शान्ति की कलाओं के ह्रास को जताती हुई त्रेतायुग की द्योतक है जिसमें भी सात्विकता, पवित्रता, सुख और शान्ति विद्यमान होते हैं यद्यपि कम मात्रा में। तत्पश्चात् बायीं दिशा में संकेत करती हुई भुजा इस बात को चित्रित करती है कि त्रेता के अन्त में देवता वाम मार्ग में चले गए। धर्म की ग्लानि आरम्भ हो गई। जीवन वाम पक्ष की ओर मुड़ गया अर्थात् उसमें अपवित्रता, दु:ख और अशान्ति ने प्रवेश किया और समाज को विभाजित करने वाले कारण जैसे कि अनेक धर्म, अनेक भाषाएं, अनेक वाद शुरू हो गये और इनके परिणामस्वरूप लड़ाई-झगड़े, घृणा, द्वेष – ये भी दिनों-दिन बढ़ते चले गए।

इसके बाद स्वास्तिक की चौथी भुजा, जो बायीं ओर ऊपर की दिशा में उठी है, वो बुराई, लड़ाई, पापाचार, अत्याचार, विकार के बढ़ते जाने की द्योतक है। यहाँ तक कि धर्म की अति ग्लानि हो जाती है और कलियुग के अन्त में घोर अज्ञानता, पापाचार और नरसंहार होता है।

धर्म की अति ग्लानि की इस बेला में ही परमात्मा अवतरित होकर ज्ञान और योग की शिक्षा देते हैं। पुन: सतयुग की स्थापना करते हैं, मनुष्य को देवता बनाते हैं और नर को श्रीनारायण पद के अधिकारी बनाते हैं।

इस प्रकार स्वास्तिक विश्व के तीनों कालों के इतिहास का तथा आत्माओं के आवागमण के चक्र का रहस्य खोल कर हमारे सामने रख देता है। इस रहस्य को जान लेने से मनुष्य का कल्याण हो जाता है। अमंगल-मंगल में, अशुभ-शुभ में और अनिष्ट, निर्विघ्नता में परिवर्तित हो जाता है। इसलिए जैसे गणपति ज्ञान-निष्ठ अवस्था के प्रतीक हैं, वैसे ही यह स्वास्तिक भी ज्ञान को एक रेखाचित्र द्वारा एक दृष्टि में ही समझा देता है और इसलिए इसे भी लोग गणेश ही कहने लगे हैं। जैसे वह हर शुभ कार्य अथवा धार्मिक आयोजन के प्रारम्भ में गणपति का पूजन करने लगे, वैसे ही वे ये रेखाकार चित्र अपने बही के शुरू में, भूमि पूजन के समय, गृह प्रवेश के समय तथा हर मंगलकारी पर्व के समय करने लगे, इसके साथ-साथ वह कलश और नारियल का भी प्रयोग करने लगे क्योंकि परमपिता ज्योतिस्वरूप परमात्मा की आकृति भी नारियल जैसी है और उस ज्ञान सागर पिता ने सागर को गागर में बन्द करने की उक्ति के अनुसार नर-नारियों को ज्ञान कलश दिया और स्वास्तिक रूपी चक्र की तरह सृष्टि चक्र का ज्ञान दिया।

इन सब रहस्यों को समझते हुए अब हमें यह चाहिए कि स्वास्तिक द्वारा सृष्टि चक्र का जो ज्ञान स्पष्ट होता है और गणपति अथवा प्रजापिता ब्रह्मा जिस कारण से ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ हुए, उस ज्ञान को हम अब सुनें और धारण करें।

हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि अब परमपिता परमात्मा शिव ने फिर से वह ज्ञान-कलश प्रदान किया है और फिर से उस लुप्त-प्राय: ज्ञान का रहस्य सुनाया है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, हरेक इच्छुक नर-नारी को अपनी यह नि:शुल्क सेवा प्रदान करता है कि वह इसके किसी भी सेवाकेन्द्र पर प्रात: या सायं पधार कर ज्ञान रूपी अमृत का पान करें तथा जीवन में आनन्द रूपी मार्ग का बोध करें।

सम्बलपुर। सम्बलपुर के डी.आर.एम. तथा उनकी धर्मपत्नी के साथ ज्ञान चर्चा करते हुए ब्र.कु.पार्वती।

कुरावली-यू.पी.। चेयरमैन अभिलाष सिंह राठौर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.संगीता तथा ब्र.कु.विकास रंजन।

मैनपुरी-यू.पी.। उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यमंत्री ठा.जयवीर सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.अवन्ति। साथ हैं ब्र.कु.नरेन्द्र।

हुमनाबाद-कर्नाटक। गीता पाठशाला के उद्घाटन समारोह में विधायक राजशेखर पाटिल, एम.आर.गादा, ब्र.कु.प्रतिमा, ब्र.कु.राधा तथा ब्र.कु.प्रभाकर।

मण्डी-गोविन्द गढ़। 'अलविदा डायबिटिज़ शिविर' का उद्घाटन करते हुए डॉ.श्रीमन्त साहू, नगर काउंसिल सरदार हरपाल सिंह, सैक्शनल आफिसर दीपक सप्परा, उद्योगपति राजकुमार जी, दिनेश कुमार तथा ब्र.कु.शशि।

मनोहरथाना। मातेश्वरी जी की 48वीं पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए तहसीलदार शिवदयाल वर्मा, प्रिंसीपल रामजीलाल कोली, ब्र.कु.मीना तथा अन्य।